

प्रीलमिस फैक्ट्स : 27 मार्च, 2018

माधवपुर मेला

एक अनोखी पहल के अंतर्गत, गुजरात के प्रसिद्ध माधवपुर मेले का उत्तर-पूर्व के राज्यों के साथ पहला सांस्कृतिक एकीकरण दिखाई देगा। इस एकीकरण का उद्देश्य देश के विभिन्न हिस्सों, प्रमुख रूप से उत्तर-पूर्वी राज्यों को एक भारत-श्रेष्ठ भारत कार्यक्रम के तहत एक-दूसरे के नजिक लाना है।

- यह मेला अरुणाचल प्रदेश की मशिमी जनजात से संबद्ध है। मशिमी जनजात, प्राचीन राजा भीष्मक और उनकी पुत्री रुक्मिणी के ज़रिये भगवान कृष्ण को अपना पूरवज मानती है।
- पहली बार, इस मेले में भगवान कृष्ण के साथ रुक्मिणी देवी की अरुणाचल प्रदेश से गुजरात तक की अमर यात्रा का उल्लास मनाया जाएगा।
- रुक्मिणी के परिवार के प्रतिनिधियों के तौर पर उत्तर-पूर्व से 150 लोगों के एक जत्थे का माधवपुर मेले में पारंपरिक स्वागत किया जाएगा।
- नचिले दबिांग घाटी शहर में रोड़ंग के नकट स्थिति भीष्मकनगर का जकिर कल्कपुराण में भी मलिता है।
- राष्ट्रीय कला केंद्र (IGNCA), संस्कृति मंत्रालय के तहत, मानव संग्रहालय और गुजरात, असम, अरुणाचल प्रदेश और मणिपुर राज्य एवं अन्य संस्थाएँ, इस मेले को एक नया आयाम देने के लिये एक साथ काम कर रही हैं।
- इस अभियान में पश्चिम बंगाल को छोड़कर शेष सभी राज्य एवं संघीय क्षेत्र भाग ले रहे हैं।
- इस वर्ष के उत्सव का मूल उद्देश्य एक भारत-श्रेष्ठ भारत अभियान के अनुरूप है और विविधता में एकता की देश की विशिष्टता को दर्शाने के साथ-साथ पश्चिम एवं पूर्व के बीच संबंध स्थापित करना है।
- दोनों क्षेत्रों के सांस्कृतिक एकीकरण के उद्देश्य से आयोजित किये गए चार दिनों के इस पर्व में अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर एवं उत्तर-पूर्व के अन्य राज्यों की कला, नृत्य, संगीत, कविता, कथा वाचन और लोक-नाटकों का जीवंत प्रदर्शन किया जाएगा।

पृष्ठभूमि

माधवपुर घेड, एक छोटा लेकिन सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण गाँव है, जहाँ लोककथाओं के अनुसार, भगवान कृष्ण ने राजा भीष्मक की बेटी रुक्मिणी से विवाह किया था। माधवपुर पौरबंदर के नकट, समुद्र तट पर स्थित है। 15वीं शताब्दी में निर्मित माधवराय मंदिर स्थल को प्रतिबिंबित करता है। इस समारोह का आगाज़ एक सांस्कृतिक मेले द्वारा किया जाता है, जो रामनवमी से शुरू होता है। कृष्ण की मूर्त को लेकर एक रंगीन रथ गाँव की परिक्रमा करता है और आमतौर पर यह उत्सव पाँच दिनों तक चलता है।

लक्ष्मि कैंसर चिकित्सा के लिये नैनोमोटर्स

शोधकर्ताओं द्वारा एक नए प्रकार के जकि-फेराइट-लेपित चुंबकीय नैनोमोटर्स को विकसित किया गया है, जो बेहद स्थिर होते हैं और कैंसर कोशिकाओं को मारने के लिये स्थानीय ऊष्मा (heating) उत्पन्न कर सकते हैं। इस शोध को 'नैनोस्केल' में प्रकाशित किया गया है।

मात्र 3 माइक्रोन

- आकार में मात्र करीब 3 माइक्रोन को मापने के लिये, चुंबकीय नैनोमोटर्स को रक्त, ऊतक आदि जैसे विभिन्न जैविक वातावरणों में कम-से-कम 100 गौस (मनुष्यों के लिये सुरक्षित स्तर) के घूर्णन चुंबकीय क्षेत्र का कुशलतापूर्वक उपयोग किया जा सकता है और शरीर में रुचिके क्षेत्र को लक्षित किया जा सकता है।
- वे अपने गैर-आक्रामक (non-invasive) प्रकृति के कारण लोकप्रिय हैं और रासायनिक ईंधन की आवश्यकता के अभाव में उन्हें आगे बढ़ाते हैं।
- प्रयोगशाला में मानव ग्रीवा कैंसर कोशिकाओं पर इन नैनोमोटर्स का उपयोग करने के लिये हाइपरथर्मिया परीक्षण किया गया था।
- उचित चुंबकीय क्षेत्र और लगभग 20 मिनट के लिये आवृत्तिका प्रयोग करने से तापमान 7-8 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ जाता है।
- इस नए विकास ने नैनोमोटर्स के अनेकों तकनीकी मुद्दों को सुलझाया है, जैसे - नैनोमोटर्स का संकुलन (agglomeration)।
- इस क्षेत्र में भविष्य के अनुसंधानों को संपूर्ण (in-vivo) प्रयोगों की ओर निर्देशित किया जाएगा।
- यह कैंसर चिकित्सा विज्ञान के लिये लक्ष्मि चिकित्सा का महान नहितार्थ हो सकता है।

ग्रेट प्रशांत कचरा पैच (Great Pacific Garbage Patch)

यह विश्व का सबसे बड़ा और शायद सबसे ज्यादा प्रसिद्ध तैरते हुए कचरे का संग्रह है। एक अनुमान के अनुसार, हवाई और कैलिफोर्निया के मध्य स्थिति इस क्षेत्र में वर्तमान में 80,000 मीटरिक टन वज़नी 1.8 ट्रिलियन प्लास्टिक के टुकड़े तैर रहे हैं।

- यह पृथ्वी पर समुद्री प्लास्टिक के संचय का सबसे बड़ा क्षेत्र है।
- ऐसा माना जाता है कि वर्तमान में इसका आकार महाद्वीपीय फ्रांस का तीन गुना है।
- इस पैच की खोज 1997 में एक नाविक चार्ल्स मूरे द्वारा की गई।
- इस संपूरण कचरे का 94% भाग माइक्रो प्लास्टिक से बना हुआ है। इसका एक बड़ा भाग मछली पकड़ने के परतियक्त सामानों, जैसे- मछली पकड़ने का जाल, रस्सियों, घोंघे के खोल, सर्पमीन को पकड़ने का जाल, पेटियों और टोकरियों आदि से बना हुआ है।
- वैज्ञानिकों का अनुमान है कि इन मलवों का 20% भाग 2011 में आई जापान की सुनामी से आया है।

कटहल (jackfruit) केरल का आधिकारिक फल

हाल ही में केरल राज्य सरकार द्वारा कटहल को अपना आधिकारिक फल घोषित किया गया है।

- सरकार का उद्देश्य 'केरल कटहल' के माध्यम से (इसके जैविक और पौष्टिक गुणों को प्रदर्शित करते हुए) देश और विदेश के बाजारों में एक ब्राण्ड के रूप में प्रवेश करना है।
- इससे मूल्यवर्द्धति उत्पादों को बढ़ाने के अलावा, फलों के उत्पादन और बिक्री में भी मदद मिलेगी।
- इस फल की ब्राण्डिंग के माध्यम से कटहल और इससे संबद्ध उत्पादों की बिक्री के जरूरी 15,000 करोड़ रुपए का राजस्व प्राप्त होने की संभावना है।
- 'केरल कटहल' अधिक कार्बनिक और स्वादपि्ट होता है क्योंकि यह किसी भी रासायनिक उर्वरक या कीटनाशकों का उपयोग किये बिना पूरगतः प्राकृतिक तरीके से उत्पादित किया जाता है।

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/prelims-fact-27-03-2018>

